



Yadu Dubey

15 Jun 2010

11:21 AM

Jabalpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 121895001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 15/06/2010
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 11:21:00 घंटे
इष्ट _____: 14:51:48 घटी
स्थान _____: Jabalpur
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:10:00 उत्तर
रेखांश _____: 79:57:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:10:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 11:10:48 घंटे
वेलान्तर _____: -00:00:25 घंटे
साम्पातिक काल _____: 04:44:26 घंटे
सूर्योदय _____: 05:24:16 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:57:00 घंटे
दिनमान _____: 13:32:44 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 00:02:24 मिथुन
लग्न के अंश _____: 18:40:39 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: पुष्य - 2
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: ध्रुव
करण _____: वणिज
गण _____: देव
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: हे-हेमन्त
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1932	ज्येष्ठ	25
पंजाबी	संवत : 2067	आषाढ़	1
बंगाली	सन् : 1417	ज्येष्ठ	31
तमिल	संवत : 2067	आनी	1
केरल	कोल्लम : 1185	मिथुनम	1
नेपाली	संवत : 2067	आषाढ़	1
चैत्रादि	संवत : 2067	ज्येष्ठ	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2067	ज्येष्ठ	शुक्ल 3

पंचांग

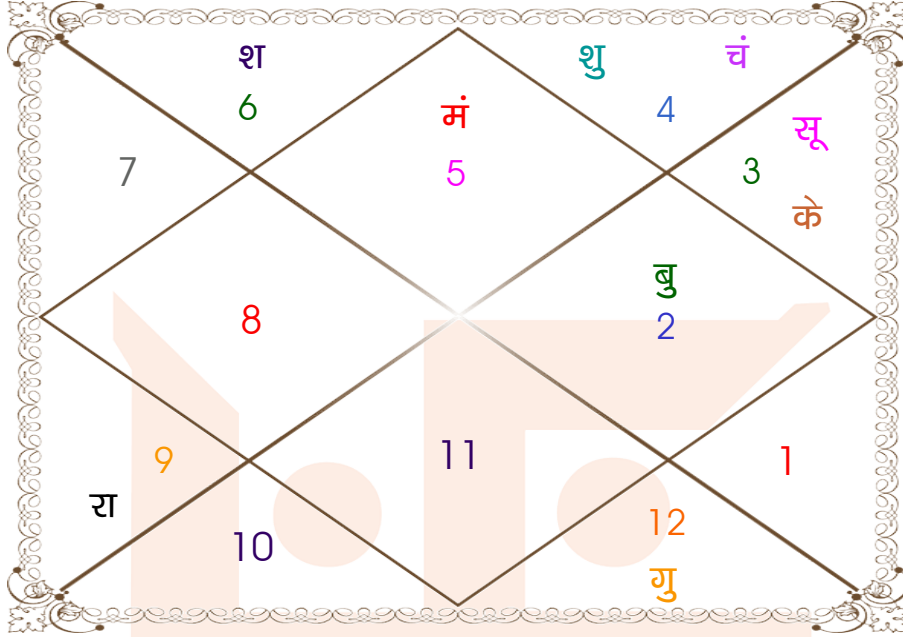
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 3
तिथि समाप्ति काल _____ : 09:20:50
जन्म तिथि _____ : 4
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुष्य
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 27:05:00 घंटे
जन्म योग _____ : पुष्य
सूर्योदय कालीन योग _____ : ध्रुव
योग समाप्ति काल _____ : 15:41:17 घंटे
जन्म योग _____ : ध्रुव
सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
करण समाप्ति काल _____ : 09:20:50 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 15:53:36
भभोग _____ : 55:13:36
भोग्य दशा काल _____ : शनि 13 वर्ष 6 मा 12 दि

घात चक्र

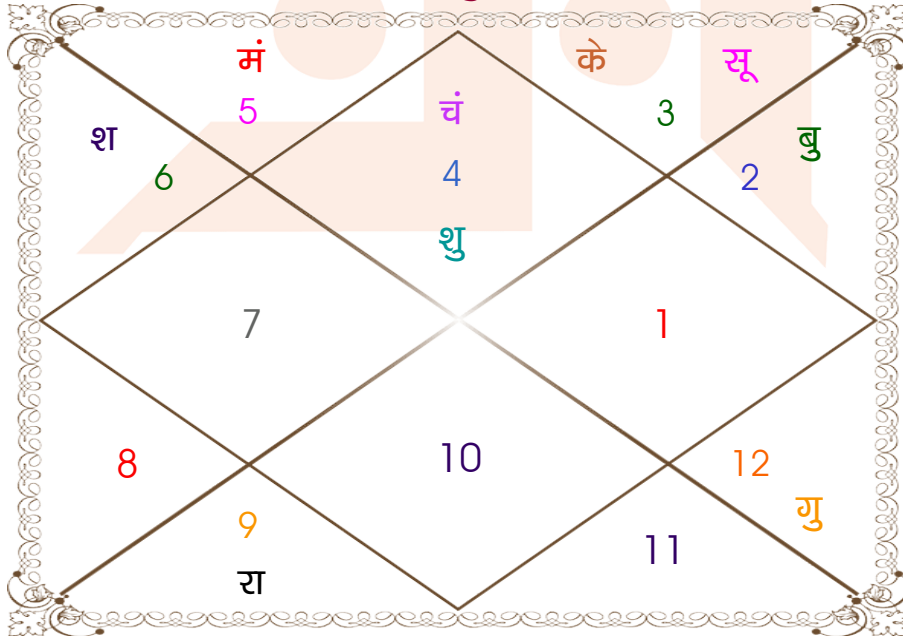
मास _____ : पौष
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : बुधवार
नक्षत्र _____ : अनुराधा
योग _____ : व्याघात
करण _____ : नाग
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : श्वान
लग्न _____ : तुला
सूर्य _____ : सिंह
चन्द्र _____ : सिंह
मंगल _____ : कन्या
बुध _____ : मिथुन
गुरु _____ : तुला
शुक्र _____ : वृश्चिक
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

गु	बु	सू के
		शु चं
		मं ल
रा		श

लग्न कुंडली

के सू	बु	गु
	शु चं	
ल मं	श	रा

विंशोत्तरी
शनि 13वर्ष 6मा 12दि
शनि

15/06/2010

28/12/2124

शनि	27/12/2023
बुध	27/12/2040
केतु	27/12/2047
शुक्र	27/12/2067
सूर्य	27/12/2073
चन्द्र	27/12/2083
मंगल	27/12/2090
राहु	28/12/2108
गुरु	28/12/2124

योगिनी

धान्या 2वर्ष 1मा 19दि

उल्का

04/08/2021

04/08/2027

उल्का	04/08/2022
सिद्धा	04/10/2023
संकटा	02/02/2025
मंगला	04/04/2025
पिंगला	04/08/2025
धान्या	02/02/2026
भ्रामरी	04/10/2026
भद्रिका	04/08/2027

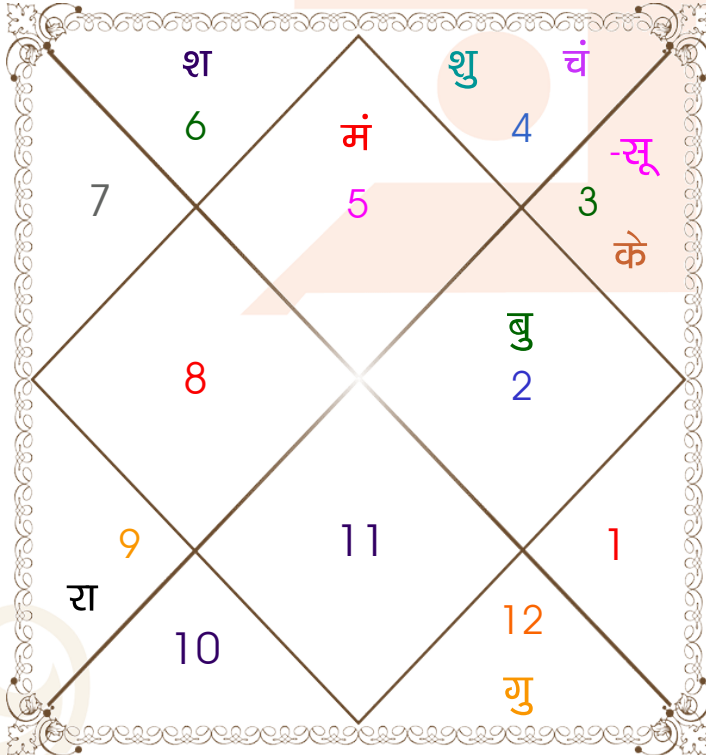
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	18:40:39	329:12:01	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	---
सूर्य			मिथु	00:02:24	00:57:20	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	बुध	सम राशि
चंद्र			कर्क	07:10:08	14:29:03	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	बुध	स्वराशि
मंगल			सिंह	10:13:20	00:32:17	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	मित्र राशि
बुध			वृष	14:56:42	01:53:38	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
गुरु			मीन	07:06:59	00:06:51	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	स्वराशि
शुक्र			कर्क	07:01:00	01:10:08	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	बुध	शत्रु राशि
शनि			कन्या	04:01:41	00:01:34	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	मित्र राशि
राहु			धनु	17:57:46	00:00:50	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	मंगल	नीच राशि
केतु			मिथु	17:57:46	00:00:50	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	सूर्य	नीच राशि
हर्ष			मीन	06:24:56	00:00:59	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
नेप	व		कुंभ	04:38:19	00:00:28	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	शुक्र	---
प्लूटो	व		धनु	10:22:16	00:01:30	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	---
दशम भाव			वृष	18:34:00	--	रोहिणी	--	4	शुक्र	चंद्र	बुध	--

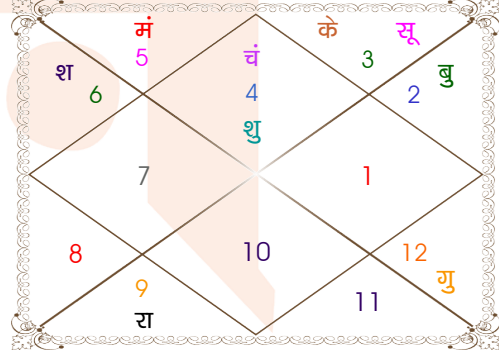
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:00:28

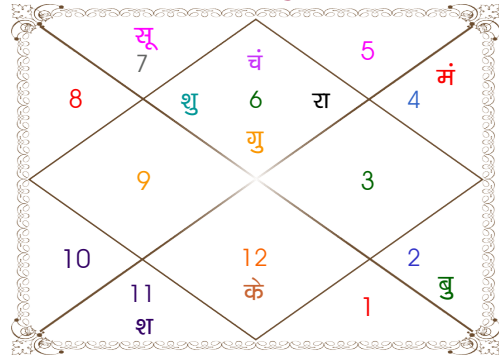
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 03:39:33	सिंह 18:40:39
2	कन्या 03:39:33	कन्या 18:38:26
3	तुला 03:37:20	तुला 18:36:13
4	वृश्चिक 03:35:07	वृश्चिक 18:34:00
5	धनु 03:35:07	धनु 18:36:13
6	मकर 03:37:20	मकर 18:38:26
7	कुम्भ 03:39:33	कुम्भ 18:40:39
8	मीन 03:39:33	मीन 18:38:26
9	मेष 03:37:20	मेष 18:36:13
10	वृष 03:35:07	वृष 18:34:00
11	मिथुन 03:35:07	मिथुन 18:36:13
12	कर्क 03:37:20	कर्क 18:38:26

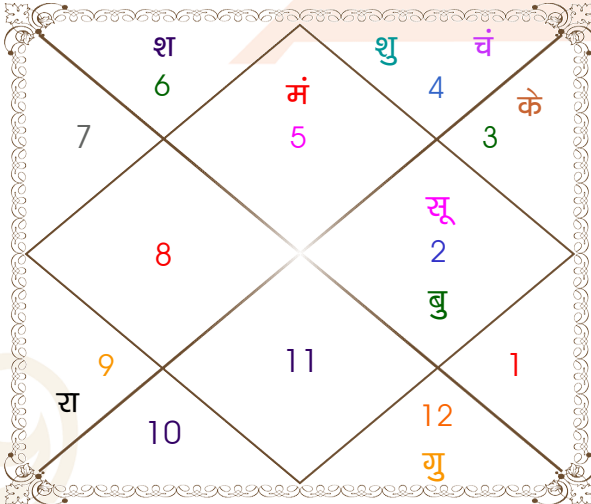
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	18:40:39
2	कन्या	16:45:30
3	तुला	17:18:27
4	वृश्चिक	18:34:00
5	धनु	19:23:53
6	मकर	19:34:19
7	कुम्भ	18:40:39
8	मीन	16:45:30
9	मेष	17:18:27
10	वृष	18:34:00
11	मिथुन	19:23:53
12	कर्क	19:34:19

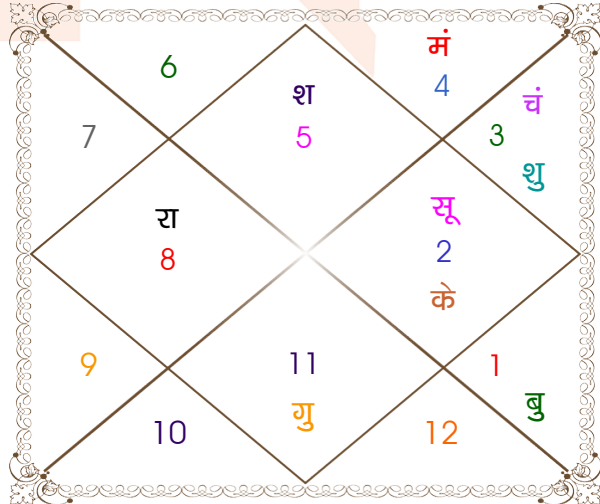
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 13 वर्ष 6 मास 12 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
15/06/2010 27/12/2023	27/12/2023 27/12/2040	27/12/2040 27/12/2047	27/12/2047 27/12/2067	27/12/2067 27/12/2073
15/06/2010	बुध 25/05/2026	केतु 25/05/2041	शुक्र 28/04/2051	सूर्य 15/04/2068
बुध 09/09/2010	केतु 22/05/2027	शुक्र 25/07/2042	सूर्य 27/04/2052	चंद्र 15/10/2068
केतु 18/10/2011	शुक्र 22/03/2030	सूर्य 30/11/2042	चंद्र 27/12/2053	मंगल 19/02/2069
शुक्र 18/12/2014	सूर्य 27/01/2031	चंद्र 01/07/2043	मंगल 26/02/2055	राहु 14/01/2070
सूर्य 30/11/2015	चंद्र 27/06/2032	मंगल 27/11/2043	राहु 26/02/2058	गुरु 02/11/2070
चंद्र 30/06/2017	मंगल 24/06/2033	राहु 14/12/2044	गुरु 27/10/2060	शनि 15/10/2071
मंगल 09/08/2018	राहु 12/01/2036	गुरु 20/11/2045	शनि 27/12/2063	बुध 21/08/2072
राहु 15/06/2021	गुरु 19/04/2038	शनि 30/12/2046	बुध 27/10/2066	केतु 27/12/2072
गुरु 27/12/2023	शनि 27/12/2040	बुध 27/12/2047	केतु 27/12/2067	शुक्र 27/12/2073

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
27/12/2073 27/12/2083	27/12/2083 27/12/2090	27/12/2090 28/12/2108	28/12/2108 28/12/2124	28/12/2124 00/00/0000
चंद्र 27/10/2074	मंगल 25/05/2084	राहु 08/09/2093	गुरु 15/02/2111	शनि 31/12/2127
मंगल 28/05/2075	राहु 12/06/2085	गुरु 02/02/2096	शनि 28/08/2113	बुध 16/06/2130
राहु 26/11/2076	गुरु 19/05/2086	शनि 09/12/2098	बुध 04/12/2115	00/00/0000
गुरु 28/03/2078	शनि 28/06/2087	बुध 28/06/2101	केतु 09/11/2116	00/00/0000
शनि 28/10/2079	बुध 24/06/2088	केतु 17/07/2102	शुक्र 11/07/2119	00/00/0000
बुध 28/03/2081	केतु 20/11/2088	शुक्र 17/07/2105	सूर्य 28/04/2120	00/00/0000
केतु 27/10/2081	शुक्र 20/01/2090	सूर्य 10/06/2106	चंद्र 28/08/2121	00/00/0000
शुक्र 28/06/2083	सूर्य 28/05/2090	चंद्र 10/12/2107	मंगल 04/08/2122	00/00/0000
सूर्य 27/12/2083	चंद्र 27/12/2090	मंगल 28/12/2108	राहु 28/12/2124	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 13 वर्ष 6 मा 11 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध 27/12/2023 25/05/2026	बुध - केतु 25/05/2026 22/05/2027	बुध - शुक्र 22/05/2027 22/03/2030	बुध - सूर्य 22/03/2030 27/01/2031	बुध - चंद्र 27/01/2031 27/06/2032
बुध 30/04/2024 केतु 20/06/2024 शुक्र 14/11/2024 सूर्य 28/12/2024 चंद्र 11/03/2025 मंगल 02/05/2025 राहु 10/09/2025 गुरु 06/01/2026 शनि 25/05/2026	केतु 15/06/2026 शुक्र 15/08/2026 सूर्य 02/09/2026 चंद्र 02/10/2026 मंगल 23/10/2026 राहु 16/12/2026 गुरु 03/02/2027 शनि 01/04/2027 बुध 22/05/2027	शुक्र 11/11/2027 सूर्य 01/01/2028 चंद्र 28/03/2028 मंगल 27/05/2028 राहु 29/10/2028 गुरु 16/03/2029 शनि 27/08/2029 बुध 21/01/2030 केतु 22/03/2030	सूर्य 07/04/2030 चंद्र 03/05/2030 मंगल 21/05/2030 राहु 06/07/2030 गुरु 17/08/2030 शनि 05/10/2030 बुध 18/11/2030 केतु 06/12/2030 शुक्र 27/01/2031	चंद्र 11/03/2031 मंगल 10/04/2031 राहु 26/06/2031 गुरु 03/09/2031 शनि 24/11/2031 बुध 06/02/2032 केतु 07/03/2032 शुक्र 01/06/2032 सूर्य 27/06/2032
बुध - मंगल 27/06/2032 24/06/2033	बुध - राहु 24/06/2033 12/01/2036	बुध - गुरु 12/01/2036 19/04/2038	बुध - शनि 19/04/2038 27/12/2040	केतु - केतु 27/12/2040 25/05/2041
मंगल 18/07/2032 राहु 10/09/2032 गुरु 29/10/2032 शनि 25/12/2032 बुध 14/02/2033 केतु 08/03/2033 शुक्र 07/05/2033 सूर्य 25/05/2033 चंद्र 24/06/2033	राहु 11/11/2033 गुरु 15/03/2034 शनि 10/08/2034 बुध 20/12/2034 केतु 12/02/2035 शुक्र 17/07/2035 सूर्य 02/09/2035 चंद्र 18/11/2035 मंगल 12/01/2036	गुरु 01/05/2036 शनि 09/09/2036 बुध 04/01/2037 केतु 22/02/2037 शुक्र 10/07/2037 सूर्य 20/08/2037 चंद्र 28/10/2037 मंगल 15/12/2037 राहु 19/04/2038	शनि 21/09/2038 बुध 07/02/2039 केतु 06/04/2039 शुक्र 17/09/2039 सूर्य 05/11/2039 चंद्र 26/01/2040 मंगल 23/03/2040 राहु 18/08/2040 गुरु 27/12/2040	केतु 04/01/2041 शुक्र 29/01/2041 सूर्य 06/02/2041 चंद्र 18/02/2041 मंगल 27/02/2041 राहु 21/03/2041 गुरु 10/04/2041 शनि 04/05/2041 बुध 25/05/2041
केतु - शुक्र 25/05/2041 25/07/2042	केतु - सूर्य 25/07/2042 30/11/2042	केतु - चंद्र 30/11/2042 01/07/2043	केतु - मंगल 01/07/2043 27/11/2043	केतु - राहु 27/11/2043 14/12/2044
शुक्र 04/08/2041 सूर्य 25/08/2041 चंद्र 30/09/2041 मंगल 24/10/2041 राहु 27/12/2041 गुरु 22/02/2042 शनि 01/05/2042 बुध 30/06/2042 केतु 25/07/2042	सूर्य 31/07/2042 चंद्र 11/08/2042 मंगल 18/08/2042 राहु 07/09/2042 गुरु 24/09/2042 शनि 14/10/2042 बुध 01/11/2042 केतु 08/11/2042 शुक्र 30/11/2042	चंद्र 17/12/2042 मंगल 30/12/2042 राहु 31/01/2043 गुरु 28/02/2043 शनि 03/04/2043 बुध 03/05/2043 केतु 16/05/2043 शुक्र 20/06/2043 सूर्य 01/07/2043	मंगल 10/07/2043 राहु 01/08/2043 गुरु 21/08/2043 शनि 13/09/2043 बुध 05/10/2043 केतु 13/10/2043 शुक्र 07/11/2043 सूर्य 15/11/2043 चंद्र 27/11/2043	राहु 23/01/2044 गुरु 15/03/2044 शनि 14/05/2044 बुध 08/07/2044 केतु 30/07/2044 शुक्र 02/10/2044 सूर्य 21/10/2044 चंद्र 22/11/2044 मंगल 14/12/2044

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

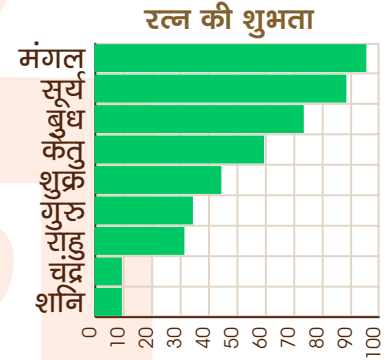
मूलांक	6
भाग्यांक	6
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	95%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, सुख
माणिक्य	सूर्य	88%	धनार्जन, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	73%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन, धन
लहसुनिया	केतु	59%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	44%	व्यय, व्यावसायिक हानि, पराक्रम हानि
पुखराज	गुरु	34%	दुर्घटना, सन्तति कष्ट
गोमेद	राहु	31%	सन्तति कष्ट, दुर्घटना
मोती	चंद्र	9%	व्यय
नीलम	शनि	9%	धन हानि, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	27/12/2023	75%	0%	83%	80%	34%	53%	34%	44%	44%
बुध	27/12/2040	94%	0%	95%	86%	34%	53%	9%	31%	59%
केतु	27/12/2047	75%	0%	100%	73%	34%	53%	0%	6%	72%
शुक्र	27/12/2067	75%	0%	95%	80%	34%	59%	22%	44%	66%
सूर्य	27/12/2073	100%	21%	100%	73%	46%	19%	0%	6%	44%
चंद्र	27/12/2083	94%	34%	95%	80%	34%	44%	9%	6%	44%
मंगल	27/12/2090	94%	21%	100%	61%	46%	44%	9%	6%	66%
राहु	28/12/2108	75%	0%	83%	73%	34%	53%	22%	53%	44%
गुरु	28/12/2124	94%	21%	100%	61%	54%	19%	9%	31%	59%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	19/09/2090-25/10/2090 21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	18/08/2095-11/10/2097 02/05/2098-20/06/2098	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	व्यय
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात् आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुण्डली में सूर्य, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये

पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

वृष राशि में बुध हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, उच्चपद पर आसीन, सुगठित शरीर, दिखावा पसन्द करने वाला, शास्त्रज्ञ, व्यायामप्रिय, धनवान्, गम्भीर, मधुरभाषी, विलासी एवं रतिशास्त्रज्ञ होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(27/12/2023 - 27/12/2040)

बुध की महादशा 27/12/2023 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 27/12/2040 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध दशम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण सन्तान से सुख और शत्रु पर विजय मिली होगी तथा कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल रही होगी। बुध की इस दशा में आप को यश तथा ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति होगी, सम्मान और उत्तम शिक्षा मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें भरपूर शक्ति, उत्साह तथा क्रियाशीलता रहेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण हल्का ज्वर, विषाणु जन्य संक्रामक बीमारी, त्वचा रोग तथा स्नायविक दुर्बलता हो सकती है। अधिक मानसिक तथा शारीरिक श्रम से बचे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से आय में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद से भी आय में वृद्धि होगी। आपको माता-पिता से लाभ मिल सकता है। सट्टे में लेन-देन लाभदायक होगा। जीविकोपार्जन के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर तथा हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान मिलेगा, आय में वृद्धि होगी तथा वरिष्ठ कर्मचारियों और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार तथा व्यवसायियों के कार्य-क्षेत्र में वृद्धि होगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित लेन-देन लाभदायक होगा। चल-अचल सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। वाहन सुख भी मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा सूर्य की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक उपलब्धि आपकी जीविका की संभावना में वृद्धि करेगी। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा व्यापार के विषय में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि

है। आपका दिमाग विवेक पूर्ण व विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके जीवन साथी की अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और सुख की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता की विदेश यात्रा, साझेदारों से लाभ तथा आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके पिता का धन-संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में शुभ परिवर्तन और अचानक लाभ मिलेगा जबकि बड़ों का शुभ उद्देश्य के लिए व्यय होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अति उत्तम रहेगा। इस दशा के दौरान आपको यश, सम्मान तथा सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको व्यवसाय में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि सूर्य को अन्तर्दशा में व्यय तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और कुछ बाधाएं हो सकती हैं। राहु की अन्तर्दशा में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप बच्चों से सुख मिलेगा।

**अंतर्दशा :- बुध - बुध
(27/12/2023 - 25/05/2026)**

आपके लिए बुध की महादशा 27/12/2023 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 27/12/2023 को प्रारंभ होकर 25/05/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। कार्यों में और कार्यालय में सफलता मिलेगी। उद्देश्य के प्रति सजग रहेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। धनलाभ, प्रसिद्धि और शत्रुओं पर विजय की संभावना है। लेखनकार्य के लिए शुभ समय है। विज्ञान, गणित और व्यापार में दक्षता बढ़ेगी। घरेलू सुख और समृद्धि का योग है। बहुत से मित्र बनेंगे। अचल संपत्ति और वाहन क्रय कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को घरेलू सुख मिलेगा। आपके पिता को कार्यों में सफलता मिलेगी; पारिवारिक सुख रहेगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा, नया व्यापार प्रारंभ कर सकती हैं।

आपके भाई-बहनों के लिए विविध लाभ, ज्ञान-विज्ञान में सक्रियता, यात्रा और मामूली बाधाओं का संकेत है। आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; स्पर्धियों पर सफलता पाने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो नौकरी से या मामा पक्ष के लोगों से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सौभाग्यशाली रहेंगे; उच्चपद प्राप्त हो सकता है। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मामूली गठिया आदि की शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए समाजसेवी संस्था में दान दें।

**अंतर्दशा :- बुध - केतु
(25/05/2026 - 22/05/2027)**

आपके लिए बुध की महादशा 27/12/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 25/05/2026 को प्रारंभ होकर 22/05/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। अन्य लोगों से अप्रत्याशित सहायता मिल सकती है। कार्य पूर्ण होंगे, सम्मान और प्रसिद्धि मिलेंगे। चुनाव में विजय मिलेगी, शत्रु परास्त होंगे। संतान सुखकारी होगी; संतान से सुख मिलेगा। ज्ञानार्जन में रुचि होगी। कला, खेलकूद और राजनीति में दिलचस्पी ले सकते हैं।

आपके जीवनसाथी धनी और भाग्यशाली होंगे। आपके पिता कृतसंकल्प रहेंगे। माता के जीवन में अप्रत्याशित घटना घट सकती है। उन्हें धन का लाभ होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, समृद्धि, आत्मविश्वास और अध्यात्म में रुचि का संकेत है।

आपकी संतान सामूहिक गतिविधियों से लाभान्वित होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो विवाह हो सकता है, स्पर्धियों पर विजय होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनी बनेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी, आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता हर प्रकार से धन कमाएंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द, तेल, कंबल और तिल दान में दें।

**अंतर्दशा :- बुध - शुक्र
(22/05/2027 - 22/03/2030)**

आपके लिए बुध की महादशा 27/12/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 22/05/2027 को प्रारंभ होकर 22/03/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ेंगे, मगर सीमा में रहेंगे। धन की बचत होगी। आप दयालु और धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे। सब सुख और सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। शत्रुओं पर विजय होगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। मामा पक्ष के लोगों से लाभ होगा। खेती और बागबानी से अच्छी आय हो सकती है। पालतू जंतुओं से सुख मिलेगा। मुकदमे में जीत होगी।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, स्पर्धियों पर विजय होगी। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय करेंगे, धनी बनेंगे। आपकी माता भाग्यशाली होंगी, यात्राएं करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, अच्छी आय, उत्तम जीवन, विभिन्न माध्यमों से आय, भोग-विलास की वस्तुओं की प्राप्ति का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कोई अप्रत्याशित घटना घट सकती है। धन का लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भागीदारी से लाभ होगा, व्यस्तता बढ़ेगी। परामर्शदाताओं की लघु यात्राएं हो सकती हैं, मार्केटिंग और बारीकी के कार्य में लाभ होगा। व्यापारी स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नेत्रों और शरीर के निचले अंगों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

**अंतर्दशा :- बुध - सूर्य
(22/03/2030 - 27/01/2031)**

आपके लिए बुध की महादशा 27/12/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 22/03/2030 को प्रारंभ होकर 27/01/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद और सम्मान प्राप्त करेंगे। सफलता और समृद्धि का योग है। घरेलू सुख मिलेगा। बड़े भाई-बहनों से मधुर संबंध रहेंगे। महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मित्रता हो सकती है। संतान से सुख मिलेगा। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शिक्षा उत्तम रहेगी, अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को भागीदारी से लाभ होगा, इच्छाएं पूर्ण होंगी, व्यापार में लाभ होगा, यात्रा हो सकती है। आपके पिता को धनार्जन होगा, सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी, साहित्य से लाभ हो सकता है। माता को अचानक धन मिल सकता है, अध्यात्म में रुचि होगी, अचानक कोई घटना घट सकती है।

आपके भाई-बहन भाग्यशाली रहेंगे, धन, पिता से लाभ, धर्म में रुचि, सफलता, प्रगति, उच्चाधिकारियों की प्रसन्नता, सम्मान और उच्चपद का योग है।

आपकी संतान को सफलता मिलेगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी, शिक्षा में प्रगति होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं को धनलाभ होगा। व्यापारी खूब पैसा कमाएंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों और नेत्रों में मामूली व्याधि हो सकती है।